National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 128-129

शिक्षा में पाठ्य सहगामी क्रियाएं एवं विभिन्न मूल्य निर्माण में इन क्रियाओं की उपादेयता

[1] बालेश्वर नाथ पाण्डेय, [2] डॉ0 नीता सिन्हा

[1] अतिथि प्रवक्ता सी0 एम0 पी0 डिग्री कालेज, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।
[2] एसोसिएट प्रोफेसर सी0.एम0.पी. डिग्री कालेज, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

शिक्षा प्राचीन काल से निरन्तर चलने वाली गतिषील प्रक्रिया है। विद्यालय में शिक्षा संचालन के लिए शिक्षण और पाठ्य सहगामी क्रियाओं को उपकरण के रूप में प्रयुक्त करके शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में उपयोग किया जाता है। इसी संदर्भ में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत आने वाली गतिविधियों की पहचान एवं मूल्यों के महत्व को दर्शाया गया है।

पाठ्य सहगामी क्रियाएं बालक के मानसिक एवं शारीरिक विकास को संतुलन प्रदान करती है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में बालक अपनी रूचि एवं योग्यता के अनुसार प्रतिभाग करता है जिसके कारण बालक में आत्म विश्वास निर्णय लेने की क्षमता एवं नेतृत्व गुण जैसे व्यक्तित्व गुणों का विकास होता है। बालक पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से स्वयं को शिक्षण के साथ ही चारित्रिक गुणों में निपुणता प्राप्त करता है। कोठारी आयोग (1964–66) के अनुसार शिक्षण के साथ ही छात्रों को पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से नेतृत्व कौशल एवं व्यक्तित्व के गुणों को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

पाठ्य सहगामर क्रियाओं के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों को संरक्षित एवं संबर्धित किया जाता है।

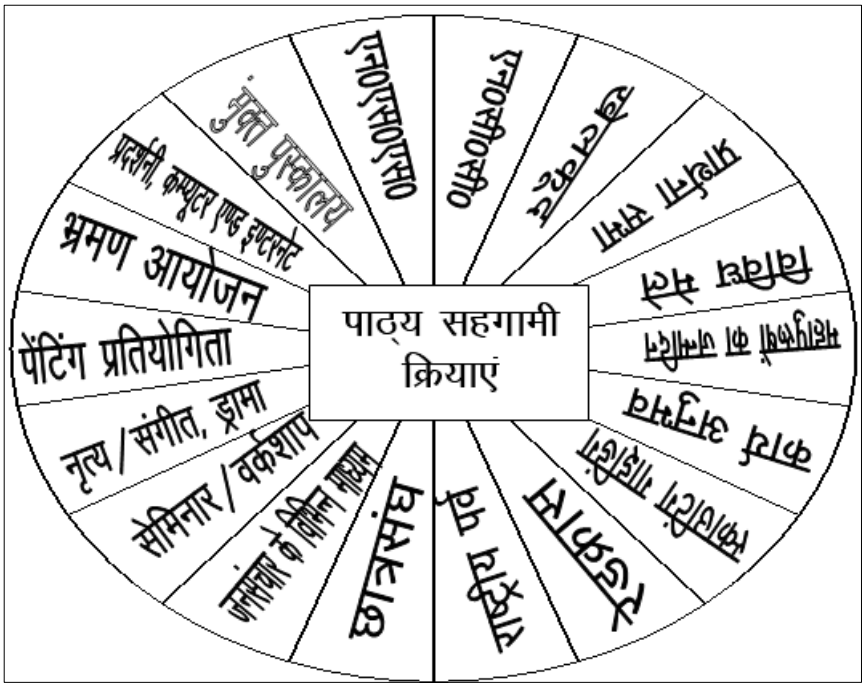

प्रार्थना सभा के माध्यम से सभी लोगों में ऊँच–नीच की भावना का समापन, सर्व धर्म समभाव की भावना, अनुशासन, ध्यान की एकाग्रता, लयबद्ध गायन, उत्तम सोच का विकास होता है। विद्यालयों में समय–समय पर सांस्कृतिक मेलों का आयोजन विभिन्न धर्मों से सन्दर्भित करना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में विविध धर्मों की मान्यताओं, आदर्शों? मूल्यों, पैगम्बरों के उपदेशों के बारे में जागरूकता एवं सत्य के प्रति आदर एवं निष्ठा का भाव जागृत किया जाना चाहिए।

खेलकूद के माध्यम से विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों में नेतृत्व कौशल एवं समूह में कार्य एवं सामंजस्य के विकास में खेलकूद महत्वपूर्ण उपकरण हैं। वर्तमान समय में खेलकूद किसी खेल विशेष हेतु विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने का माध्यम बन रहे हैं जिसे विद्यार्थी भावी जीवन में व्यवसाय हेतु खेल विशेष को अपनाता है। खेल–कूद में निश्चित नियमों के पालन की अनिवार्यता विद्यार्थियों में अनुशासन के आदत के विकास हेतु महत्वपूर्ण उपकरण है।

नेशनल कैडेट क्राप (एन0सी0सी0) के माध्यम से छात्रों में अनुशासन एवं आत्मरक्षा के योग्यताओं का विकास किया जाता है। एन0सी0सी0 के माध्यम से छात्रों को कठिन परिस्थितियों में संघर्ष एवं आत्मरक्षा हेतु तैयार किया जाता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना (एन0एस0एस0) के माध्यम से छात्रों में सामुदायिक दायित्व के प्रति जिम्मेदारियों का अहसास कराया जाता है। समुदाय के लिए छात्रों के भावात्मक एवं नैतिक दायित्व बोध को एन0एस0एस0 के माध्यम से विकसित किया जाता है। छात्रों में समूह द्वारा सामुदायिक कर्तव्य निर्वाह के दृष्टिकोंण का विकास किया जाता है। बड़ें एवं कठिन कार्यो को समूह के माध्यम से सरलता पूर्वक करने के सामाजिक एकता के विचार के प्रति छात्रों में आदर भाव का विकास करने में राष्ट्रीय सेवा योजना का विशेष महत्व है।

मुक्त विश्वविद्यालय के माध्यम से छात्रों में स्वतन्त्र विचारों के निर्माण एवं विभिन्न प्रकार के विचारों एवं उपदेशों के प्रति भिन्न–भिन्न व्यक्तियों, लेखकों, समाजशास्त्रियों, राजनीतिज्ञों के मतों का तार्किक विश्लेषण एवं परख की योग्यता का विकास किया जाता है। छात्र में नवीन विचारों के प्रस्फुटन एवं नवीन प्रश्नों के समाधान में मुक्त पुस्तकालय की महत्वपूर्ण भूमिका है। छात्रसंघ के माध्यम से छात्रों में लोकतंत्र एवं नेतृत्व कौशल की योग्यता को विकसित करने में सहायता मिलती है। छात्र संघ के माध्यम से छात्रों में राजनैतिक, लोकतांत्रिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

राष्ट्रीय पर्व के माध्यम से छात्रों में देशभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा, त्याग, बलिदान एवं अच्छे नागरिक मूल्यों को विकसित किया जाता है। छात्रों में देश–प्रेम एवं लोकतांत्रिक समरसता के भाव को विकसित करने में राष्ट्रीय पर्व महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

रेडक्रास के माध्यम से किसी आपदाग्रस्त क्षेत्रों में छात्रों को स्वास्थ्य सुविधाओं एवं राहत सामग्री के वितरण हेतु सामुंदायिक दायित्व एवं कर्तव्य बोध को जागृत करने में सहायता मिलती है। छात्रों में मानवीय मूल्यों (करूणा, प्रेम, दया, परोपकार आदि) के विकास में रेडक्रास सेवाओं का विशेष महत्व है।

स्काउटिंग एवं गाइडिंग के माध्यम से छात्रों में सांस्कृतिक विविधता एवं कठिन परिस्थितियों (जंगल, पर्वत, बाढ़ आदि) के प्रति संघर्ष एवं समायोजन की योग्यता के विकास को बढ़ावा मिलता है। छात्रों में रोमांच एवं वीरोचित गुणों (निडरता, साहस, आक्रामकता, धैर्य आदि) गुणों के विकास में स्काउटिंग एवं गाइडिंग) का विशेष महत्व है।

कार्य अनुभव के माध्यम से छात्रों में किसी शिल्प एवं वास्तुकला की योग्यताओं का विकास करने में सहायता मिलती है। छात्रों में तकनीकी एवं कौशल के विकास के साथ ही शारीरिक श्रम के प्रतत आदर एवं सम्मान की भावना का विकास करने में कार्य अनुभव सक्षम है।

महापुरूषों के जन्म दिवस मनाने से छात्रों में आदर्श एवं मानवीय उत्थान के कार्यों के प्रति आदर भाव का सूत्रपात होता है। मान–सम्मान प्राप्त करने हेतु छात्र के व्यक्तित्व पर महापुरूषों का विशेष प्रभाव पड़ता है। जिस पर विवेकानन्द जी का जन्म दिवस मनाने पर युवाओं के व्यक्तित्व पर स्वामी विवेकानन्द जी का प्रभाव महसूस किया जा सकता है। विविध प्रकार के मेले जैसे – पुस्तक मेला, शिल्प मेला, धार्मिक मेला, सामाजिक मेला आदि छात्रों के व्यक्तित्व पर विशेष प्रभाव डालते हैं। इन मेलों के माध्यम से छात्र के अन्दर सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं कौशल से सम्बन्धित योग्यताओं का विकास किया जा सकता है।

जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के द्वारा छात्रों की जिज्ञासाओं को विषय विशेषज्ञों, तकनीकियों के माध्यम से 24 घण्टे निवारित करने के अवसर विद्यमान हो रहे हैं। छात्र अपनी जिज्ञासाओं का हल अपनी सुविधानुसार प्राप्त कर रहा है। छात्रों को स्वयं के विचारों को प्रसारित करने में सहायता प्राप्त हो रही है। छात्र घर बैठे सोशल मीडिया के माध्यम से स्वयं की समस्याओं एवं वैचारिक दृष्टिकोंण को कुछ समय में ही विशाल श्रोता समूह के समक्ष प्रदर्शित करने में सक्षम है।

सेमिनार एवं वर्कशाप के माध्यम से छात्रों में किसी निश्चित विषय वस्तु के सन्दर्भ में विषय विशेषज्ञों के माध्यम से विषय पर क्रियात्मक गतिविधियों के माध्यम से छात्रों के विषयगत व्यवसायगत कौशलों का संवर्धन करना निश्चित ही छात्र हित हेतु प्रस्तावित क्रिया विधियों में एक महत्वपूर्ण क्रियाविधि है।

नृत्य, संगीत एवं ड्रामा के माध्यम से छात्रों के भावनात्मक एवं मनोरंजक व्यवहारों को विकसित करने में सहायता मिलती है। वर्तमान समय में छात्र नृत्य, संगीत एवं ड्रामा को व्यवसाय के रूप में भी चयनित कर रहे हैं। छात्रों में नृत्य, संगीत एवं ड्रामा के प्रति व्यवसायिक आकर्षण बढ़ा है।

पेंटिंग प्रतियोगिताओं के माध्यम से छात्रों के भावात्मक विचारों का व्यवहारात्मक प्रदर्शन संभव हो पाता है। पेंटिंग के माध्यम से छात्रों में सृजनात्मक एवं नवाचारी विचारों की उत्पत्ति संभव है। वर्तमान समय में छात्र की व्यवसायिक जरूरतें भी पेंटिंग द्वारा पूरी हो रही हैं। यह छात्रों हेतु आकर्षक व्यवसाय का पर्याय बन रहा है।

भ्रमण आयोजन के द्वारा छात्रों में भ्रमण के महत्व एवं उपयोगिता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है। राहुल सांस्कृत्यायन के आयातों जिज्ञासा में भ्रमण के महत्व का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि सैद्धान्तिक विचारों को मूर्त रूप प्रदान करने में भ्रमण अहम भूमिका निभाते हैं। छात्रों में सैद्धान्तिक विचारों की व्यवहारिक अनुभूति भ्रमण द्वारा प्राप्त होती है। प्रत्यक्ष किम् प्रमाणन अर्थात् प्रत्यक्ष से साक्षात्कार कराना ही भ्रमण का प्रथम एवं अन्तिम उद्देश्य है। छात्रों को सैद्धान्तिक एवं प्रत्यक्ष के मध्य अन्तर समझाने में भ्रमण की महत्वपूर्ण उपयोगिता है।

प्रदर्शनी के माध्यम से छात्रों में प्रदर्शन एवं अभिव्यक्ति चारित्रिक मूल्यों का विकास संभव है। छात्रों मेकं स्वयं के प्रदर्शन एवं अभिव्यक्ति हेतु किये गये क्रियाकलाप छात्रों के आत्म विश्वास को बढ़ाने एवं संकोच को दूर करने में प्रभावी होते हैं।

कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट के माध्यम से छात्रों में तकनीकी कुशलता एवं सूचना तंत्र के विशाल ज्ञान कोश के प्रति आकर्षण एवं रूचि दिखाई देती है। वर्तमान समय में डिजीटल क्रांति और 4–जी डाटा की उपलब्धता से छात्र ज्ञान एवं सूचनाओं के भण्डार के द्वार पर खड़ा हो गया। अपनी आवश्यकता एवं योग्यता के द्वारा विश्व के किसी भी विषय वस्तु के बारे में अत्यन्त कम समय में सम्पूर्ण सूचना प्राप्त की जा सकती है।

पाठ्य सहगामी क्रियाएं छात्रों में मानवीय, सामाजिक, राष्ट्रीय, राजनैतिक, सांस्कृतिक, व्यवहारिक, व्यक्तित्व एवं चारित्रिक मूल्यों के निर्माण में अति उपयोगी साधन के रूप में प्रस्तुत होती है। किसी भी शैक्षिक व्यवस्था में पाठ्य सहगामी क्रियाएं छात्रों के सर्वागीण विकास में अपना योगदान देती हैं। छात्रों को जागरूक एवं आत्मनिर्भर बनाने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का विशेष महत्व है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय, रामशकल और चतुर्वेदी, ममता, उदीयमान, भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा (2004) ।
2. एन0आर0 स्वरूप, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर0लाल बुक डिपो (2010) ।
3. www.nss.nic.in
4. www.digitalindia.gov.in
5. https://india.gov.in